खण्ड-191, अंक-10
शनिवार, 3 फाल्गुन, शक संवत् 1879
(22 फरवरी, 1958 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 191 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९५८

मूल्य : बिना महसूल 25 नये पैसे, महसूल सहित 31 नये पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, २२ फरवरी, १९५८ ई०

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य (२८३)

अक्षयवरसिंह, श्री
अज़ीज़ इमाम, श्री
अनन्तराम वर्मा, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल लतीफ नोमानी, श्री
अभयराम यादव, श्री
अमरनाथ, श्री
अमोलादेवी, श्रीमती
अयोध्याप्रसाद आर्य, श्री
अवधेशचन्द्र सिंह, श्री
अहमद बख्श, श्री
आत्माराम पांडेय, श्री
आर्थर सी०आइस, श्री
इन्दुभूषण गुप्त, श्री
इरतजा हुसेन, श्री
उग्रसेन, श्री
उमाशंकर शुक्ल, श्री
उल्फतसिंह, श्री
ऊदल, श्री
एस० अहमद हसन, श्री
कन्हैयालाल बाल्मीकि, श्री
कमलकुमारी गोइंदी, कुमारी
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलेशचन्द्र, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
किशनसिंह, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
केशभानराय, श्री
केशवपांडेय, श्री
केशवराम, श्री

कैलाशवती, श्रीमती
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खजानसिंह चौधरी, श्री
खमानीसिंह, डाक्टर
खयालीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा)
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गनेशचन्द्र काछी, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाबख्श सिंह, श्री
गरीबदास, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीकृष्ण आजाद, श्री
गोविन्दसिंह बिष्ट, श्री
गौरीराम गुप्त, श्री
गौरीशंकर राय, श्री
घनश्याम डिमरी, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चन्द्रहास मिश्र, श्री
चन्द्रावती, श्रीमती
चंद्रिकाप्रसाद, श्री
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
छोटेलाल पालीवाल, श्री
जंगबहादुर वर्मा, श्री
जगदीशनारायण, श्री

जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ लहरी, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जमुनासिंह, श्री (बदायूं)
जयदेवसिंह आर्य, श्री
जयराम हैदर, श्री सैयद
जवाहरलाल, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
जागेश्वर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जोखई, श्री
ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री
झारखंडेराय, श्री
टम्बरेश्वर प्रसाद, श्री
टीकाराम, श्री
टीकाराम पुजारी, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तारादेवी, डाक्टर
तेजासिंह, श्री
त्रिलोकीसिंह, श्री
दत्त, श्री एस०जी०
दशरथप्रसाद, श्री
दाताराम चौधरी, श्री
दीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्तसिंह, श्री
देवनारायण भारतीय, श्री
देवराम, श्री
द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्री (मुजफ्फरनगर)
द्वारिकाप्रसाद, श्री (फर्रुखाबाद)
द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपुर)
धनीराम, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मपालसिंह, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री (मैनपुरी)
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नन्दराम, श्री
नरदेवसिंह दतियानवी, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नवलकिशोर, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायणदास पासी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
परमानन्द सिनहा, श्री
परमेश्वरदीन वर्मा, श्री
प्रतापबहादुरसिंह, श्री
प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री
प्रभावती मिश्र, श्रीमती
प्रभुदयाल, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बंशीधर शुक्ल, श्री
बलदेवसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बसंतलाल, श्री
बादामसिंह, श्री
बाबूराम, श्री
बालकराम, श्री
बिन्दुमती दास, श्रीमती
बिशम्बरसिंह, श्री
बिहारीलाल, श्री
बुलाकीराम, श्री
बृजवासीलाल, श्री
बृजरानी मिश्र, श्रीमती
बेचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बृजभूषणशरण, श्री
ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री
भजनलाल, श्री
भीखालाल, श्री
भीमसेन, श्री
भुवनेशभूषण शर्मा, श्री
भूपकिशोर, श्री
मंजूरुलनबी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री
मदन पांडेय, श्री
मन्नालाल, श्री
मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी)
महमूब अली खां, कुंवर (मेरठ)
महमूद अली खां, श्री (रामपुर)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महेन्द्ररिपुदमनसिंह, राजा
मान्धाता सिंह, श्री
मिहरबानसिंह, श्री
मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुरलीधर, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री

मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री
मोतीलाल अवस्थी, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह मेहता, श्री
यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री
यमुनासिंह, श्री (गाजीपुर)
यशपालसिंह, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेंद्रदत्त, दुबे, राजा
रऊफ जाफरी, श्री
रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री
रघुबीरराम, श्री
रघुबीरसिंह, श्री (मेरठ)
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकांतसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राघवराम पांडेय, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजकुमार शर्मा, श्री
राजदेव उपाध्याय, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेंद्रदत्त, श्री
राजेंद्रसिंह, श्री
राजेंद्रसिंह यादव, श्री
रामअभिलाख, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकुमार वैद्य, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदीन, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामनारायण त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामबली, श्री
रामरतनप्रसाद, श्री
रामरतीदेवी, श्रीमती
रामलक्षण तिवारी, श्री
रामलखनसिंह, श्री (जौनपुर)
रामलाल, श्री
रामशरण यादव, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह चौहान, वैद्य
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप यादव, श्री
रामस्वरूप वर्मा, श्री
रामहेतसिंह, श्री
रामेश्वरप्रसाद, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मीनारायण, श्री
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लायकसिंह चौधरी, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री
लुत्फ अली खां, श्री
लोकनाथ सिंह, श्री
बजरंगविहारीलाल रावत, श्री
वशिष्ठ नारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
वासुदेव दीक्षित, श्री
विचित्रनारायण, शर्मा, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्रामराय, श्री
वीरसेन, श्री
वीरेंद्र वर्मा, श्री
वीरेंद्रशाह, राजा
वृजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुंतलादेवी, श्रीमती
शमसुल इस्लाम, श्री
शम्भुदयाल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवगोपाल तिवारी, श्री
शिवप्रसाद, श्री (देवरिया)
शिवराजबलीसिंह, श्री
शिवराजबहादुर, श्री
शिवराम पांडेय, श्री
शिववचनराव, श्री
शिवशंकरसिंह, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शीतलाप्रसाद, श्री
शोभनाथ, श्री
श्यामलाल, श्री

श्यामलाल यादव, श्री
श्रीकृष्ण गोयल, श्री
श्रीनाथ, श्री (आजमगढ़)
श्रीनिवास, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
संग्राम सिंह, श्री
सईद अहमद अंसारी, श्री
सजीवनलाल, श्री
सज्जनदेवी महनोत, श्रीमती
सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती
सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती
सीताराम, डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुक्खनलाल, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुरथबहादुरशाह, श्री
सुरेंद्रसिंह, राजकुमार
सुरेशप्रकाशसिंह, श्री
सुल्तानआलम खां, श्री
सूरतचन्द्र रमोला, श्री
सूर्यबली पांडेय, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीदुल्ला खां, श्री
हरदयालसिंह, श्री
हरदेवसिंह, श्री
हरिदत्त कांडपाल, श्री
हरिहरबख्शसिंह, श्री
हरीसिंह, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
होरीलाल यादव, श्री

भारत के शिक्षा मंत्री, मौलाना अबुल कलाम आजाद के निधन पर शोकोद्गार

कृषि मंत्री (श्री हुकुम सिंह विसेन)---माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश के लिये बहुत ही खराब दिन हैं। आज के दिन हमारे बीच से एक इतनी बड़ी हस्ती उठ गयी है और एक जगह ऐसी खाली हो गयी है जिसको पूरा करना सम्भव नहीं प्रतीत होता है।

मौलाना अबुलकलाम आजाद एक विशेष हस्तियों में से थे। मुझे भी उनके साथ १९४० में नैनी जेल में छः महीने तक रहने का मौका मिला था और उस जमाने में मैंने उनको बहुत करीब से भी देखा। उनकी प्रशंसा करना मेरे ऐसे छोटे आदमी के लिये बहुत मुश्किल मालूम होता है। वह खूबियों की खान थे। जितना ही उनके बारे में सोचा जाय उतना ही दुख होता है।

उनकी विद्वता के सम्बन्ध में मैं क्या अर्ज करूं--अरबी और फार्सी के वह स्कालर थे। एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। हमारे देश के कोने-कोने में उनका नाम था।

अखिल भारतीय कांग्रेस क अध्यक्ष वह मुताद्दिद बार हुए और उस जमाने में हुए और देश की राजनीति की नौका को चलाया जब हमारे देश की राजनीति बड़े मुश्किल जमाने से गुजर रही थी।

क्रिप्स मिशन के सिलसिले में भी उन्होंने अपने देश का पथ प्रदर्शन किया। शिमला कान्फ्रेंस में उन्होंने बड़ी योग्यता के साथ नेगोशिएशंस को पार लगाया जिसके फलस्वरूप हमारा देश आजाद हुआ।

वह एक बड़े भारी फिलासफर थे। वह वेस्टर्न और ईस्टर्न फिलासफी के ज्ञाता थे। उनमें जो खूबियां थीं उनका जिक्र करना जैसा मैंने पहले कहा मेरे लिये मुश्किल है।

आज वह हमारे बीच से चले गये। उनके सम्पर्क में हमारे बहुत से भाई आये होंगे। मैं समझता हूं कि वह एक ऐसी हस्ती थे जिसका अपने छोटों के साथ बड़ा प्रेम का बर्ताव रहा करता था। "अरे मेरे भाई" उनका तकियाकलाम था। वह छोटों को भी इसी नाम से पुकारा करते थे। उनका ऐसा व्यवहार होता था कि छोटा उनके सामने उनमें और अपने में कोई फर्क नहीं पाता था। किसी किस्म के भेद-भाव की जगह उनके दिल में नहीं थी। सब को मालूम है पूरे तौर से कि मुस्लिम लीग के जमाने में उनपर कितना कटु आक्षेप हुआ। उनको 'शो ब्वाय' तक कहा गया, लेकिन वह अपने राष्ट्रीय पथ से कभी विचलित नहीं हुए। उस कटुतापूर्ण आलोचना को बड़ी खूबी के साथ बरदाश्त किया। अपने राष्ट्रीय विचारों में जैसे-जैसे उनके खिलाफ लोग टीकाटिप्पणी करते थे वह दृढ़ होते जाते थे। आखीर दम तक उन्होंने देश की सेवा एक राष्ट्रीय व्यक्ति के नाते की। हिन्दोस्तान की बहबूदी उनकी लगन थी। केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री के नाते से उन्होंने देश की बहुत बड़ी सेवा की। उनके जमाने में कई संस्थायें खोली गयीं जो कि ठीक ढंग से इस देश की सेवा कर रही हैं।

मैं और ज्यादा इस मौके पर न कहकर इतना अर्ज करना चाहता हूं कि मैं अपने राज्य की तरफ से, इस सदन की तरफ से और अपनी तरफ से उनके कुटुम्बियों के साथ समवेदना प्रकट करता हूं और अध्यक्ष महोदय, आप से प्रार्थना करता हूं कि आप हम लोगों की फीलिंग उनके कुटुम्बियों के पास भेजने की कृपा करें।

एक प्रार्थना अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे और करता हूं कि इस कार्यवाही के बाद इस सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जावे।

श्री त्रिलोकी सिंह (जिला लखनऊ)—अध्यक्ष महोदय, जो खटका दो दिन से लगा हुआ था वह आज प्रातः काल सत्य साबित हुआ। मौलाना आजाद केवल इस देश के ही नहीं बल्कि संसार के महान पुरुषों में थे। ऐसे बहुत थोड़े व्यक्ति होते हैं कि जो बड़े पैदा होते हैं। मौलाना उन्हीं बिरले आदमियों में से एक थे। कौन नहीं जानता अध्यक्ष महोदय, कि २१, २२ साल की उम्र में जो ख्याति उन्होंने हासिल की इस देश में ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विशेषकर एशिया के ऐसे देशों में जहां मुस्लिम आबादियां रहती हैं उनकी वही ख्याति अन्तिम समय तक कायम रही। एक आला दिमाग आदमी, कोई मसला नहीं था किसी शगल का वह चाहे क्यों न हो कि जो मौलाना के सामने पेश किया जाता था और वह उसकी एक सेकेंड के अन्दर नस नहीं पकड़ लेते थे। कभी जिन्दगी में वह अपने उसूल से नहीं टले। यह जानते नहीं थे कि जिस बात को वह सही न समझें उसके साथ कैसे सुलह की जाय। दृढ़प्रतिज्ञ और अपने ख्यालात के पुख्ता भारतवर्ष में बड़े-बड़े वक्ता पैदा हुए लेकिन संभवतः मौलाना से ज्यादा इम्प्रेसिव स्पीकर (प्रभावशाली वक्ता) पिछले तीस चालीस साल के अन्दर इस देश में नहीं पैदा हुआ। यह नहीं कि वह महज उर्दू नज्म में माहिर थे या अरबी और फारसी के आलिम थे, वह फ्रेंच के एक बड़े स्कालर थे और बड़ी बात थी कि इस वर्तमान युग में अंग्रेजी को अच्छी तरह से जानते हुए अपनी गुफ्तगू में, खतो-किताबत में, तकरीर में कभी उन्होंने अंग्रेजी का इस्तेमाल नहीं किया। यहां तक कि जब उनसे यह कहा गया कि क्यों आप मामूली मामलात में किसी दुभाषिये को साथ रखते हैं तो उनका यही कहना था हमेशा कि हम जब किसी विदेशी आदमी से बात करेंगे या अपने आपस में बात करेंगे तो मादरी जबान में बात करेंगे, जो हमारी मातृभाषा हो। विदेशी भाषा का ज्ञान हमें कितना ही क्यों न हो लेकिन उसमें उस प्रकार से हम अपने विचार नहीं प्रकट कर सकते जैसे कि अपनी मातृभाषा में। राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का प्रेमी महात्मा गांधी से बढ़ कर कोई नहीं हुआ इस युग में। लेकिन वे भी परदेशी भाषाओं को अपने विचारों के व्यक्त करने में बराबर इस्तेमाल करते थे। मौलाना साहब ही एक ऐसे थे जो विदेशी भाषाओं को जानते हुए भी अपने अहद से नहीं हटे।

[श्री त्रिलोकी सिंह]

उनके न रहने से इस देश का ही नहीं बल्कि दुनिया का एक आलिम हमारे बीच से उठ गया। यह ख्याल करना कि उनकी जगह पूरी हो सकती है, एक असम्भव सी बात है। ऐसे आदमी कहीं सदियों में पैदा हुआ करते हैं। जो खूबियां मौलाना साहब में थीं और उनके प्रति जो उद्गार माननीय कृषि मंत्री जी ने प्रकट किये हैं उनसे मैं अपने को संबद्ध करता हूं और मान्यवर से यह निवेदन करता हूं कि मेरी ओर से और इस तरफ के बैठने वाले प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों की ओर से मौलाना साहब के जो सम्बन्धी हों, परिवार वाले हों, उनके प्रति हमारी समवेदना भेजने की कृपा करें।

*श्री अवधेश प्रताप सिंह (जिला फैजाबाद)—मान्यवर, मौलाना साहब के निधन से भारतवर्ष को जो महान क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होना असम्भव प्रतीत होता है। मान्यवर, मौलाना साहब उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने इस देश के लिये जो भी त्याग उनको करने पड़े, सहर्ष उन्होंने त्याग किये। उनकी विद्वत्ता ऐसी रही जिससे कि इस देश में नहीं बल्कि दूसरे देश वाले भी बहुत लाभ उठाते रहे। वह उन आलिमों में से थे जिनकी मृत्यु से उन ओरियेन्टल लैंगुएजेज में एक ऐसी खामी, त्रुटि आ गयी है जिसकी पूर्ति सदियों में कहीं हो सके तो हो सके। मौलाना साहब, फ्रेंच भाषा के विद्वान होते हुए, ओरियेंटल लैंगुएजेज के विद्वान होते हुए, अंग्रेजी लिट्रेचर को भी बहुत भली भांति समझने वाले थे। अपनी भाषा, मादरी जबान को जो श्रेय वह देना चाहते थे, उसके प्रति जो सम्मान रखते थे उसी का एक ज्वलन्त उदाहरण है कि जब परदेशियों से भी उनको वार्तालाप करना हुआ, जब कि भारत के भाग्य के निर्णय के संबंध में वह अगुआ रहे, उस समय भी दुभाषियों से अपना काम निकालते रहे और अपनी मादरी जबान की इज्जत करते रहे तथा उसको प्रोत्साहित करते रहे। मान्यवर, मैं यह समझता हूं कि ऐसे लोग कहीं सदियों में एक बार आते हैं।

मौलाना साहब ने अपने कर्तव्यों का पालन किया, अपनी उन जिम्मेदारियों को निभाया जो इस जीवन में बहुतों के प्रति हुआ करती हैं। जहां पर भी वह अग्रसर रहे, उन्होंने अपनी विद्वता और अनुभव तथा एक ऐसी बुद्धि का परिचय दिया जिससे सब के दिलों में उनके लिए एक ऐसा स्थान बन गया है जो सराहनीय है। मान्यवर अपने दल की ओर से और अपनी ओर से, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि उनके दुखित परिवार को हम लोगों की समवेदना पहुंचाने की कृपा करें। इतना ही कह कर, हम आशा करते हैं कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—श्रीमन्, आज दो तीन दिन पूर्व जब मौलाना आजाद के अचानक बीमार पड़ने की खबर आई और इस रोग से उनके बीमार होने की खबर आई तब से बहुतों के मन में यह शंका हो रही थी कि इस रोग के भीषण आक्रमण से मौलाना बच पायेंगे या नहीं। कल जब यह सदन लंच के लिये उठा, अचानक एक खबर आई कि मौलाना हमारे बीच से उठ गये। हम उस समय विधान सभा के सचिव के कमरे में बैठे हुये थे। इस खबर को सुन कर हम लोगों को ऐसा मालूम हुआ कि कोई ऐसी निधि हमारे बीच से उठ गई, जिस क्षति का पूर्ति होना असम्भव-सा है। पता लगाया गया, माननीय मीत्थल जी ने समाचार पत्रों को फोन किया। उस समय यह खबर आई कि, "नहीं, उनकी हालत में सुधार हो रहा है"। फिर तबीयत में कुछ प्रसन्नता हुई और समझ में यह बात आने लगी कि शायद वह इस आक्रमण से बच जायं। लेकिन प्रातः समाचार पत्रों में जब यह खबर पढ़ी कि मौलाना इस संसार से उठ गये तो बड़ा भारी कष्ट हुआ।

श्रीमन्, हमारे पूर्व वक्ताओं ने मौलाना की विद्वता, उनके राष्ट्रीय प्रेम के सम्बन्ध में जिन भावों का उद्गार किया है, मैं कतई उनसे सहमत हूं। मुझे भी मौका मिला मौलाना का साक्षात्कार करने का और उस समय मिला है जब कि हिन्दुस्तान की राजनीति में, हिन्दुस्तान का नवयुवक वर्ग बड़ा गरम हो रहा था। श्रीमन्, पटना में १९४१ की बात है, जब द्वितीय विश्व-

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

युद्ध छिड़ गया था। व्यक्तिगत सत्याग्रह गांधी जी के नेतृत्व में अपने देश में चल रहा था। उस समय कुछ शक्तियां अपने देश में ऐसी थीं जो कहती थीं कि व्यक्तिगत सत्याग्रह को परिणित कर दिया जाय जन आंदोलन में और उस समय कुछ शक्तियां ऐसी भी थीं जो गांधी जी के नतृत्व की आलोचना करती थीं। श्रीमन्, मेरा उस समय विद्यार्थी जीवन था और मैं ला फाइनल में पढ़ रहा था और यह बात निर्विवाद है कि उस समय विद्यार्थी आन्दोलन पर तिमिराच्छन्न वातावरण था क्योंकि विद्यार्थियों में फूट की आशंका हो रही थी। जो लोग गांधी जी के नेतृत्व से प्रेरणा लेते थे, वह गांधी जी के ऊपर आक्षेप या नुक्ताचीनी पसन्द नहीं करते थे लेकिन विद्यार्थी आन्दोलन उस समय कम्युनिस्ट पार्टी से प्रभावित था।

श्रीमन्, जिस समय हम मौलाना आजाद के पास पटना में पहुंचे तो हमने उनसे कहा कि पटना के विद्यार्थी समुदाय में आप का भाषण होगा और आप के लिये समय रखा है एक प्रश्न उन्होंने पूछा। विद्यार्थियों के बीच में मुझे बोलना है, क्या मेरी बात वह समुदाय मानेगा? हम लोगों के ऊपर यह लांछन लग रहा था कि विद्यार्थी आन्दोलन को हमने महात्मा गांधी के हाथों में सौंप दिया है। और पटना में वह हालत थी कि शायद मौलाना आजाद को कोई बोलने न दे, मारपीट की परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। मगर प्रसन्नता की बात है कि जिस समय आजाद अपनी सौम्य मूर्ति को लेकर वहां पर आते हैं और अपना भाषण शुरू करते हैं तो किसी की हिम्मत तक नहीं पड़ी,जो शक्तियां उनके विरोध में वहां खड़ी थीं कि बीच में चूं तक कर सके। एकदम से सन्नाटा छा गया और उन्होंने राजनीतिक आन्दोलन के समर्थन में ऐसा ओजपूर्ण भाषण दिया कि जिससे जो प्रगतिशील राष्ट्रीयता के समर्थक विद्यार्थी समुदाय के थे उनके चित्त में बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने विद्यार्थी आन्दोलन को एक मोड़ दिया। श्रीमन्, उसी का नतीजा यह हुआ कि जब सन् १९४२ में गांधी जी के नेतृत्व में "क्विट इंडिया" रेजोल्यूशन पास हुआ तो आप और इस सदन में बैठे हुये जितने महानुभाव हैं वे इस बात को जानते होंगे कि विद्यार्थियों ने अपना सब कुछ न्योछावर करके उस आन्दोलन में सहर्ष भाग लिया। इसमें मैं मौलाना का भी एक बहुत बड़ा श्रेय और हिस्सा समझता हूं।

श्रीमन्, मैं मौलाना को एक शुद्ध मानव मानता हूं और मेरी बड़ी ख्वाहिश थी कि आज हमारे देश में ऐसे मनुष्य विद्यमान रहें जिनके रहने से मानवता का प्रसार हो। जब कि हमारे देश को ऐसे मनुष्यों की सब से बड़ी आवश्यकता है उसी समय ऐसे मनुष्य हमारे बीच से उठें यह हमारे लिये और भी दुख की बात है। मौलाना के बारे में गांधी जी का एक छोटा सा लेख मैंने पढ़ा है। उन्होंने स्वतः मौलाना के बारे में लिखा है कि मौलाना से बढ़ कर के इस्लाम के बारे में किसी दूसरे को जानकारी नहीं है। गांधी जी ने भी उनकी विद्वता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सदन के सम्मानित सदस्यों को ज्ञात होगा कि मौलाना जब सन् १९२३ में कांग्रेस के प्रेसीडेंट हुये तो वे सब से कम उम्र के प्रेसीडेंट हुये थे। उसके बाद सन् १९४० से ४६ तक देश की राजनीति में जो चढ़ाव उतार आया वह भी मौलाना के सभापतित्व में हुआ। मैं माननीय त्रिलोकी सिंह जी की इस बात से कतई सहमत हूं कि अपने देश की जबान में बोलने की परम्परा जो मौलाना ने डाली वह एक बहुत ही बड़ी बात थी और उसी पर हम लोगों को चलना चाहिये। जब कि क्रिप्स मिशन आया और उससे बातचीत की बात हुई तो हम लोगों को कितनी प्रसन्नता होती थी जब यह पढ़ते थे कि मौलाना हमारा प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और वे अपनी भाषा में बोलेंगे और आज जो भारत के प्रधान मंत्री हैं वे उनका भाष्य करेंगे। आज जब हम देखते हैं कि कुछ राजनीतिज्ञ उससे विचलित होते हैं तो दुःख होता है।

श्रीमन्, मौलाना की विद्वता, उनकी राष्ट्रीयता और राष्ट्रीयता के प्रति उनका प्रगाढ़ प्रेम यह हम सब लोगों में आशा का संचार करता रहा है, हम सब लोगों को प्रेरित करता रहा है। आज मैं चाहता हूं कि मौलाना के उस मानववादी स्वरूप को हम सब लोग ग्रहण करें जो पहले अपने को इन्सान समझे और इन्सान समझ कर तब जहां जाना चाहें जायं। बराबर उन्होंने कहा है कि इसलाम में समाजवाद है। बराबर उन्होंने कहा है कि इसलाम में मानवता है, इसलाम में इन्सानियत है, इसलाम में समानता है। उसमें परस्पर कलह नहीं है और साम्प्रदायिक

[श्री राजनारायण]

संघर्ष नहीं है। आज जब मैं देखता हूं कि देश के सामने बहुत से प्रश्न हैं और जब कि कुछ साम्प्रदायिक शक्तियां भी सिर उठाने की बात करती हैं तब उस समय मौलाना साहब की असमय में उठ जाने की बात अखरती है और ज्यादा खटकती है। हर तरीके से मैं यह चाहता हूं और यह चाहता था कि मौलाना साहब जैसा प्रतिभाशाली व्यक्ति इस समय मौजूद रहे जो हिन्दू और मुसलिम के बीच तफरका पैदा करने वाले लोगों का सही उत्तर है, जो अपने देश में छोटी और बड़ी जातियों के बीच तफरका पैदा करके चलने वालों का सही उत्तर है। मगर ऐसे समय पर मौलाना साहब का निधन होना, हमारे देश से उठ जाना यह हमारे लिये मार्मिक चोट है।

हम अपनी ओर से और अपनी सोशलिस्ट पार्टी की ओर से मौलाना के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके कुटुम्ब के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। आपसे निवेदन है कि हमारे इन भावों को आप उनके सन्निकट और उनके परिवार के लोगों के पास और जो लोग मौलाना के प्रति इस भाव को रखते हों, उनके पास पहुंचा दें।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर)---माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जैसा माननीय कृषि मंत्री ने कहा आज वास्तव में एक बड़े दुख का दिन है। आज हम लोगों के बीच से एक बहुत ही विद्वान, बुद्धिमान, ध्येयनिष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति उठ गया। एक बात मैं और इस पर कहूं कि जिस समय माननीय मौलाना जी चुनार गये हुये थे तो मुझे भी १० मिनट मौलाना साहब से मिलने का अवसर मिला था और मेरे मन पर जो छाप मौलाना साहब की पड़ी में उसको कहूं कि सभ्यता और सौजन्यता साकार हो कर मनुष्य के साथ खड़ी थी। अगर मैं अंग्रेजी में यह कहूं कि "Polished gentleman to his finger tips" तो ठीक होगा। ऐसे व्यक्ति देश में उत्पन्न हों यह बड़े भाग्य की बात है। मेरे पहले माननीय कृषि मंत्री ने जो बातें कहीं और जो अन्य नेताओं ने बातें कहीं मैं अपने को उन सब विचारों से सम्बद्ध करता हूं और अपनी ओर से और जनसंघ की ओर से ऐसे महापुरुष की दुखद मृत्यु पर समवेदना प्रकट करता हूं। श्रीमान् से निवेदन है कि हम लोगों की समवेदना उस संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री झारखंडेराय (जिला आजमगढ़)---गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक के बाद जिन ४ महान् पुरुषों ने देश की राजनीति में सब से बड़ा रोल अदा किया--महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और मौलाना आजाद--उनमें एक मौलाना थे जिन्होंने देश में राष्ट्रीय आन्दोलन को चलाया। उस आन्दोलन में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को वह दिन याद रहेगा जब तक वह जीवित रहेगा। जब भारत में इस छोर से उस छोर तक लीग के उन्माद का झंझावात बवंडर और खानाजंगी व कत्लेआम का तूफान चल रहा था तो उस समय जो लोग राष्ट्रीय पताका को लेकर अडिग, अविचलित आगे बढ़ रहे थे उनमें मौलाना भी अग्रणी थे। वे तमाम अपमान को झेलते ग्रेनाइट-राक की तरह अपने राष्ट्रीय पथ पर दृढ़ रहे। उनकी विद्वता, उनकी राजनीतिज्ञता, उनकी राष्ट्रीयता और उनकी प्रचंड देशभक्ति और उनके मन में मिशनरी स्प्रिट हमारे देश के किसी देश भक्त व्यक्ति से कम नहीं थी। केवल अपने देश में नहीं देश के बाहर भी राष्ट्रीय आन्दोलन को उन्होंने अपने लेखों द्वारा, अपने व्याख्यानों द्वारा और यदा-कदा जो उनको बाहर जाने का मौका मिला, उससे प्रभावित किया। विशेषकर पश्चिमी एशिया के देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन को बढ़ाने में इन साधनों द्वारा उनका योगदान रहा। मैं उस दिन को विशेषरूप से नहीं भूल सकता कि जब मुझे समाचार-पत्र में पढ़ने को मिला था कि मौलाना आजाद दिल्ली से कहीं आ रहे थे या दिल्ली को जा रहे थे और उस समय कुछ उन्मादिक साम्प्रदायवादी युवकों ने अलीगढ़ के स्टेशन पर ट्रेन के डब्बे में घुस कर उन पर सड़े अंडे फेंके और फटे जूतों का हार उनको पहनाया। एक राष्ट्रवादी युवक के नाते वह घटना और उसका मौलाना आजाद को गंभीरता के साथ झेलना, एक पत्थर की लकीर-सी छाप हमारे दिलों पर छोड़ गई है। मैं समझता हूं कि हमारे ऐसे

लाखों युवकों को जिन लोगों ने राष्ट्र प्रेम के रास्ते पर प्रोत्साहित किया उन महान् विभूतियों में--हिन्दुस्तान की ही नहीं वरन् एशिया की महान् विभूतियों में--मौलाना आजाद एक थे। श्रीमन्, मैं अधिक न कह कर यही चाहूंगा कि आप हमारी और हमारी पार्टी की इन भावनाओं को उनके संतप्त परिवार, निकट कुटुम्बियों और अन्य प्रिय जनों तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे। इन शब्दों के साथ मैं इस सदन में व्यक्त भावनाओं के साथ अपने और कम्युनिस्ट पार्टी को संबद्ध करता हूं और मौलाना की स्मृति में अपनी और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धा के फूल अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष--मौलाना अबुल कलाम आजाद के अचानक निधन पर कृषि मंत्री और अन्य दलों के नेताओं ने इस आदरणीय सदन की ओर से जो भावनायें और जो विचार प्रकट किये हैं उनके साथ मैं अपने को संबद्ध करता हूं।

मेरे सामने सन् १९२० से आज तक के सब वर्षों का और हर वर्ष में जो मौलाना ने हमारे देश के लिये सेवायें की हैं महत्वपूर्ण चित्र खड़ा हो जाता है। एक भावना जाग्रत हो जाती है कि भगवान को क्या करना है। हमारे देश से एक ऐसा पुरुष जिसकी कि हम को बहुत वर्षों तक आवश्यकता थी क्योंकर उसे हमारे बीच से विधि उठा ले गया। हमारे देश में जातीयता, साम्प्रदायिकता अभी तक घर किये हुये है और उसका कट्टर विरोधी, हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्का और सच्चे दिल से मानने वाला और उसके लिये प्रयत्न करने वाला, जो कभी डिगा नहीं, किसी भी परिस्थिति में, जब कि साम्प्रदायिक आग लगी हुई थी, उनको गालियां मिल रही थीं, लेकिन उनकी राष्ट्रीयता और मानवता वैसी ही अचल थी जैसी कि प्रारम्भ से रही और सब तरह की तकलीफों को बरदाश्त करके साम्प्रदायिकता का जिसने सामना किया, ऐसी हस्ती आज हमारे बीच में से चली गई।

मौलाना हिमालय की तरह शक्तिशाली, बुलन्द हृदय वाले क्योंकर न होते। आखिर उनका कुटुम्ब अकबर के जमाने से इसी प्रकार का रहा है। उनके खून में सत्य के प्रति निष्ठा और उसके लिये कुरबानी करने की जो शक्ति थी वह आनुवंशिक ही रही है। अकबर उनके बुजुर्गों से चाहता था कि वे उसका मत स्वीकार करें लेकिन उन्होंने नहीं स्वीकार किया। सन् १८५७ के गदर के बाद उनके पिता यहां से मक्का चले गये और वहां १८८८ में मौलाना साहेब का जन्म हुआ। उसके बाद बहुत मना कर उनके पिता को यहां लाया गया और वे यहां रहे। मैं यह कह सकता हूं कि यद्यपि गांधी जी के मौलाना आजाद पक्के अनुयायी थे और उनका साथ उन्होंने दिया, लेकिन जहां तक राष्ट्रीयता का संबंध है, विदेशीय सरकार के विरोध का संबंध है, गांधी जी से वह पहले विदेशी सत्ता के घोर विरोधी थे और 'अलहिलाल' जो उनका अखबार था उसमें सन् १९१४-१८ की लड़ाई के बारे में उनका यही सिद्धांत था कि हम ब्रिटिश सरकार का साथ तभी दे सकते हैं जबकि वह हमारे यहां से साम्राज्यवादी नीति को खत्म करदे, वरना हम उसका साथ नहीं दे सकते हैं।

गांधी जी कहते थे कि मौलाना एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने धर्म को कट्टर मानने वाले हैं, परन्तु उनमें किसी प्रकार की संकुचितता नहीं है और दूसरों के धर्म के प्रति वह किसी प्रकार की भी घृणा नहीं रखते। वह सबके साथ मेल रखते थे और भाई चारे का बरताव करते थे और यह इसी से प्रकट है कि "मेरे भाई" वह हरएक से कहा करते थे, वे कहा करते थे "मेरे भाई, जरा बात सुनना"। इससे बात करने वाला पानी पानी हो जाता था। वह सबको भाई समझते भी थे। विश्व-बन्धुत्व उनके अन्दर था। राजनारायण जी ने जैसा कहा, वह मैं भी ठीक समझता हूं। जो मानवता के सिद्धांतों को प्राथमिकता देता है उस पुरुष के जाने से संसार में जो कमी हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। भारतवर्ष के लिये तो उनके जाने से विशेष तौर से हानि हुई है। मैं नहीं समझता कि भविष्य में क्या होने वाला है, कोई दूसरा ऐसा उनका अनुयायी खड़ा होगा

[श्री अध्यक्ष]

या नहीं खड़ा होगा जो हमारे समाज में, सब सम्प्रदायों में, सब धर्मों में उसी तरह से एकता लाने का प्रयत्न करेगा जैसा मौलाना करते आये हैं। मैं इस बारे में बड़ा खतरा देखता हूं। मैं आशा करता हूं आशावादी होने के कारण कि मौलाना के आदर्शों की उनके सम्पर्क में रहने वालों के अन्दर जागृति पैदा होगी और उनकी कमी को पूरा करने का वह प्रयत्न करेंगे। ऐसी महान् आत्मा के जाने से हमको दुख होना स्वाभाविक ही है। हम उन्हीं के विश्व परिवार के लिये समवेदना प्रकट करते हैं क्योंकि विश्व-बन्धुत्व उनका सिद्धांत था, तथापि सांसारिक दृष्टि से जो उनका परिवार है उसके प्रति विशेष समवेदना प्रकट करते हैं और सदन की समवेदनायें उन तक पहुंचाने का मैं प्रयत्न करूंगा। आशा है कि उनके कुटुम्बी इस दुख को सहन करने में कामयाब होंगे और हम ने जो विचार यहां प्रकट किये हैं, वे उनको धीरज देने में सहायक होंगे।

अब हम उनकी आत्मा की शांति के लिये २ मिनट तक खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना करें।

(सब सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये।)

श्री अध्यक्ष—अब जैसी कि सदन की इच्छा है आज हम लोग भी अपने कार्य को स्थगित करते हैं।

अब हम उठते हैं और सोमवार को ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ४१ मिनट पर सोमवार, २४ फरवरी, १९५८ के ११ बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकी नन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ;
२२ फरवरी, १९५८।

सी० एस० यू० पी०—ए० पी० २९९ एल० ए०—१९५८—८१०।